पिया मेहरों के सागर हैं,करते हैं वो मेहेरें हंसी
दुख चाहे जला डाले,छूटे न कभी भी यकीं

1-हादी की हिदायत पे,हद पर ही खड़े हैँ हम
हद बेहद हो जाये,इसका कोई गम ही नहीं

2- साकी से गुजारिश है,जलवों को रवां रखना
महफिल में सरूर आये, इतना ही कि हद हीनहीं

3- जलवों में नया रंग तो,महबूब ही भरते हैं
गर सामने बैठे रहें, बांधे तो किसी के नहीं

4- जो यह पर्दा न होता सनम,थी न माया की मजबूरी
मस्ती की हकीकत तो, ब्यां करने का दम हीनहीं

5- यह बिखरी हुई तारें,जरा जोड़ के देखो तो
मयखाना उलट जाए, इसमें कोई शक ही नहीं

Nijanand App